रिकार्ड– इस पाप की दुनियां से..... ओमशांति प्रातःक्लास 22–5–67
पाप आत्माओं की दुनियां और पुण्य आत्माओं की दुनियां। नाम आत्मा का ही देखा जाता है। अभी यहां पर दुःख है (तब) पुकारते हैं। पुण्यात्माओं की दुनियां में पुकारते नहीं हैं कि कहीं ले चलो। तुम बच्चे जानते हो कि यह कोई पंडित वा .....शास्त्रवादी आदि नहीं सुनाते हैं। यह खुद भी कहते हैं कि मैं यह ज्ञान नहीं जानता था। रामायण आदि शास्त्र तो ढेरी पढ़ते थे। हम ज्ञान मैं तुमको सुनाता हूँ। यह भी सुनते हैं। अब यह है पापात्माओं की दुनियां। पुण्यात्माओं के चित्र भी यहां हैं ;परंतु किसी को भी भासना नहीं आती है। समझेंगे कि यह होकर गये हैं। बस, पूजा करके आ जाते हैं। शिव के मंदिर में भी पूजा करेंगे। तुम बच्चे अब किसकी पूजा करेंगे?तुम जानते हो कि उंच ते उंच भगवान शिव है। वो है ही ओबिडियेंट बाप, ओबिडियेंट टीचर, ओबिडियेंट परसैप्टर। साथ ले जाने की गारंटी करते हैं। ऐसी गारंटी और कोई गुरू आदि कर नहीं सकते। सो भी वो कोई सभी को थोड़े ही ले जावेंगे। अब तुम सम्मुख बैठे हो। यहां से अपने घर में जाने पर भी तुम भूल जावेंगे। यहां सामने सुनने से मजा आता है। बाप बार2 कहते हैं कि बच्चों अच्छी रीति पढ़ो। इसमें गफलत मत करो। कुसंग में ना फंसो। और ही तुच्छ बुद्धि हो जावेंगे। बच्चे जानते हैं कि हम क्या थे, क्या2 पाप किये हैं। अब हम यह (देवता) बनते हैं। यह पुरानी दुनियां खतम होनी है। फिर यहां के मकान आदि .....की क्या परवाह रखनी है। इस दुनियां का जो कुछ भी है उसको भूलना है। नहीं तो अटक डालेंगे। इसमें दिल लगती नहीं। हम नई दुनियां में जाकर अपने हीरे–जवाहरों के महल बनावेंगे। यहां की कोई चीज में ममत्व नहीं। जाकर अपना राज्य करेंगे। यहां के (पैसे) आदि कुछ भी अच्छे नहीं लगते। कोई चीज अच्छी लगती होगी तो ममत्व उसमें चला जावेगा। शरीर छूटने समय धन–दौलत आदि याद आ जावेंगे। हमारा2 करेंगे तो वो ही पिछाड़ी में सामने आ जावेगा। बाबा तो यहां पर यह मकान आदि देखते हैं। यह सब क्या है, यह तो सब खतम होना है। हम अपनी राजधानी में आ जावेंगे। इससे क्या दिल लगानी है। बच्चों को भी यही राय देते हैं कि यहां पर रखा ...हुआ क्या है। वहां पर तो बहुत सुखी रहते हो। नाम ही है स्वर्ग। अब हम तो चले हैं अपने वतन की ओर। यह कोई हमारा वतन थोड़े ही है। यह तो रावण का वतन है। इससे छूटने का पुरुषार्थ करना होता है। पुरानी दुनियां से आंचल आजाद करना है। इसलिए बाप कहते हैं कि कोई चीज में ममत्व नहीं रखो। पेट कोई जास्ती नहीं मांगता है। भील लोग 10/12 रुपये में पेट गुजरान करते हैं। तुम 30रुपया में करते हो। 30रुपये में अच्छी तरह पेट का गुजारा हो सकता है। फाल्तू चीजों पर खर्चा बहुत हो जाता है। खांसी हुई , डॉक्टर पास गये। चिट्ठी लिखवाई। सो यह एक हावी (आदत) हो जाती है। दवाई जैसी बीमारी नहीं होगी तो भी डॉक्टर पास जावेंगे। डॉक्टर के पास किसको जाना होता है यह भी समझ चाहिए। बड़े2 आदमी जो सर्विसेबुल होते हैं, जीते रहें तो वो अच्छा है। बाकी तो जो काम के नहीं ,लूले, लंगड़े वो क्या करेंगे?परंतु कहेंगे हम क्या मनुष्य नहीं हैं?हम भी तो मनुष्य हैं ना। अरे, तुम तो बर्थ नॉट अपेनी हो ;परंतु हसद बहुत है। ज्ञान नहीं है ना। समझते नहीं हैं कि यह भी बोझा चढ़ता है। तुम बच्चों को सर्विस करने लिए उछल आनी चाहिए। अभी दिल्ली में गोपों की पार्टी निकली है। गांव2 में सर्विस करने लिए। यह अच्छा है। सर्विस का शौक है। बाकी जो सर्विस का उमंग नहीं रखते हैं तो वो किस काम के?कहेंगे ऐसे तो मुंए भले। जैसे बाप है वैसे ही बच्चों को बनना चाहिए। बाप का ही परिचय देना है। बाप को ही याद करो और बाप से वर्सा लो। बच्चों को शौक होता है कि हम बाप की सर्विस पर जाते हैं। बाप भी पुस्ति(हिम्मत) देते हैं। बाबा ने ही कहा है कि भल एक ..... वेगन खरीद करो। चित्र भी आकर्षण वाले हों। दो/तीन पार्टियों को निकलना चाहिए। छः भी निकले तो भी .....देंगे कि भल छः मोटरे खरीद कर लो जिसमें चित्र आदि अच्छी रीति ले जा सको। गवर्मेंट पैसे दे देगी।

ऐसे नहीं कि गवर्मेंट चंदा इकट्ठा करेगी। शिवबाबा को ऐसी गवर्मेंट नहीं समझना। बाप आये ही हैं सर्विस पर। सर्विस के लिए ही सब कुछ है। गरीबों आदि को दान करने लिए नहीं है। यह तो बाप का परिचय सबको देना है। बाप एक ही है। आया भी भारत में ही है। भारत में ही सब देवताओं का राज्य था, दूसरा कोई धर्म नहीं था। कल की ही बात है। ल.ना.का राज्य था। फिर राम–सीता का राज्य हुआ, फिर वाममार्ग में गिरे, रावणराज्य शुरू हुआ। सीढ़ी नीचे उतरते आये। अब फिर चढ़ती कला सेकेंड की बात है। बाप कहते हैं कि कोई भी वस्तु में ममत्व नहीं रखो। एक है (रीयल लव) दूसरा आर्टीफीशल। रीयल लव बाप से तब हो जब अपने को आत्मा समझें। अभी तुम बच्चों को इस दुनियां में आर्टीफीशल लव रखना है। यह तो खतम होना ही है। इसमें क्या रखा है?सर्विस करने वाले कब भूखों नहीं मर सकते। सर्विसेबुल लक्ष्मण....है। जैसे मम्मा–बाबा ,अनन्य बच्चों का खान–पान है वैसा ही उनको भी मिले। यहां तो सब एक जैसा ही बातें हैं ना। फर्क नहीं। सर्विस में बच्चों को अच्छा शौक रखना चाहिए। हमारी ईश्वरीय मिशन बड़ी सहज है। कोई समझते नहीं हैं कि धर्म कैसे स्थापन होता है। क्राइस्ट आया, उसने क्या किया?उनकी आत्मा ने आकर क्रिश्चियन धर्म स्थापन किया। और कुछ किया क्या?क्रिश्चियन धर्म बढ़ता गया। उनकी मत पर चलते2 सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हैं। ऐसे तो नहीं कहेंगे कि शिक्षा देकर ऊपर चढ़ाया। नीचे ही उतरते आये हैं। तो अनेक प्रकार की भक्ति आदि सीखते2 नीचे ही गिरते आये हैं। तुम बच्चों को देहीअभिमानी बनना है। आधा कल्प रावणराज्य में हम बाप को भूल गये। वास्तव में यह सभी ड्रामा में पार्ट भरा हुआ है। अब बाप ने आकर सुजग किया है। बाबा ऐसे नहीं कहते कि तुम्हारी भूल है। नहीं। ड्रामा में पार्ट है। ड्रामाअनुसार तुमको गिरना ही था। तुम्हारा दोष नहीं है। रावणराज्य में दुनियां की ऐसी हालत हो ही जाती है। मनुष्य पांच विकारों में फंस मरते हैं। बना–बनाया ड्रामा है। बाप कहते हैं अभी मैं आया हुआ हूँ पढ़ाने। फिर से अपनी राजाई लो। मामेकम् याद करो। मैं और कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। एक तो बाजार की छी2 गंदगी नहीं खाओ। गंदगी खाते तुम डेड चमार बन गये हो। देवताओं के चरणों में झुकते हो। जैसे कि अल्लाह से उल्लू बन गये हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो यह ड्रामा का चक्र है। जो फिर रिपीट होगा। कौरव राज्य भी फिर होगा। प्रजा का प्रजा पर राज्य भी होना ही है। तुम्हारी बुद्धि में ड्रामा की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान है। तुमको (कोई) को भी समझा सकती हो। पहले2 तो बाप की याद रहनी चाहिए। यह भूलना नहीं चाहिए। सर्विस के लिए भी आपस में मिलकर साथी बना लेना चाहिए। (जैसे) दिल्ली से 5/7 गोप निकले हैं वैसे ही गोपियों को भी निकलना है। इसमें डरने की बात नहीं है। चित्र आदि सब तुमको मिलेंगे। तुम्हारी सर्विस जास्ती होगी। कहेंगे आप चले जाते हो फिर हमको कौन सिखावेंगे?बोलो हम तो सर्विस करने तैयार हैं। मकान आदि का प्रबंध करो। तो बहुतों के कल्याण अर्थ निमित्त बन जावेंगे। बाबा सर्विस का शौक दिलाते हैं। तुम्हारे पास ऐसा तो कोई सामान है नहीं जो कोई लूट लेवे। सेंटर्स तो नजदीक है ही। इसमें हठयोग की बात नहीं है। बाबा यह भी नहीं चाहते हैं कि पैदल जावे। नहीं, बाबा कहते हैं कार इस कार्य के लिए खरीद कर लो। कमेटी बननी चाहिए। हिम्मत वाले हैं तो सर्विस भी बढ़ती है। यह कोई वो मेला नहीं है जो 10/15 रोज मेला चला फिर खलास। यह मेला तो चलता ही रहता है। आत्मा और परमात्मा का मिलना होता है। जिनको ही मेला कहा जाता है। वो तो चल ही रहा है। यह आना अथवा प्रदर्शनी करना यह सब चलता आता है। मेला बंद तब होगा जब सर्विस पूरी होगी। ड्रामा अनुसार बच्चों में सर्विस का बड़ा शौक चाहिए। ईश्वरीय नालेज तो मिली ही है। जो बेहद के बाप में नालेज है वो ही बच्चों की बुद्धि में नालेज है। उंच ते उंच बाप से फिर हम कितना उंच बनते हैं। ऐसे2 अपने से बातें करनी है। आपस में सेमीनार करना है। बाबा से राय पर सर्विस में लग जाओ। कोई मदद की दरकार हो तो बाबा बैठा ही है। दूल्हालाल है ना। यह सब (ड्रामा)

में नूंध है। फिक्र की कोई बात नहीं है। नहीं तो स्थापना कैसे होगी?तुम बच्चों को फिक्र होगा। बाबा को तो कुछ भी खयाल नहीं रहेगा। दूसरी बात यह भी है कि जो करेगा सो पावेगा। आजकल हाफ पेपर ,फुल पेपर से भी छुड़वाकर बाबा सर्विस पर भेज देते हैं। सो भी जो अच्छे2 सर्विसेबुल हैं। जैसे कुरुक्षेत्र वाला लक्ष्मण बच्चा बहुत अच्छा सर्विसेबुल है। बाबा भी देखकर छुड़वाते हैं। ऐसे नहीं कि जो कहेंगे उनको छुड़वा देंगे। नहीं, सर्विसेबुल देखना होता है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम पत्थर बुद्धि से अब हीरे जैसा बनते हैं। इस पढ़ाई पर अच्छा अटेंशन देना चाहिए। बाप ज्ञान से इतना सीधा करते है। माया फिर नाक से पकड़कर गलत काम करवा देती है। संग बहुत अच्छा करना चाहिए। आसुरी गुण नहीं होना चाहिए। कुसंग का रंग लगने से गिर पड़ेंगे। बाबा फिल्म आदि देखने की भी मनाह करते हैं। जिनको पिक्चर देखने की आदत होगी वो कदाचित् पतित बने बिना रह नहीं सकेंगे। बाइस्कोप ऐसी गंदी चीज है। वैश्यालय है ना। यहां की हर एक एक्टिविटी डर्टी है। नाम ही है वैश्यालय। स्वर्ग को कहते हैं शिवालय। आधा कल्प शिवालय। आधा कल्प वैश्यालय। बाप शिवालय स्थापन कर रहे हैं। वैश्यालय को पूरे को आग लगनी है। कुम्भकरण की तरह असुर नींद में सोये पड़े हैं। तुमको वंडर लगता है। कैसे वंडर दिखाई पड़ते हैं। जरा भी कुछ समझते नहीं हैं। तुम भी अपने को अभी समझते हो कि हम शिवालय में जा रहे हैं। पहले हम भी बंदर–बंदरियां थे। इस पर रामायण में कहानी भी है। तुम सब बंदर थे। उनको शक्तिवान बनाकर अपनी शक्ति से राजधानी स्थापन करते थे। फिर रावणराज्य खलास हो जाता है। बाकी शास्त्रों में तो है दण्त कथायें। कितने प्यार से बैठकर सुनते हैं। एक शंकराचार्य कहता है कि भगवान भी नीचे उतर आवे तो भी हम शास्त्रों को नहीं छोड़ेंगे। एक शंकराचार्य ने कहा है कि मुसलमानों मिसल हिन्दुओं को भी एक2 चार2 शादी करनी चाहिए। नहीं तो मुसलमान बहुत हो जावेंगे। ऐसे2 शंकराचार्य को भी बहुत जाकर माथा टेकते हैं। भूख हड़ताल आदि करते रहते हैं। अभी तो कुतरों के आगे रत्न डालेंगे तो वो फेंक देंगे। इसलिए अभी कुछ देरी देखने में आती है। यह लोग इतनी जल्दी तो अपनी गद्दी नहीं छोड़ेंगे ना। बच्चों को अनेक प्रकार की युक्तियां बताते रहते हैं। किसीको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा?पहले2 तो 10/15 को रास्ता बताकर फिर पीछे भोजन खाना चाहिए। पहले शुभ काम करके आओ इसमें ही तुम्हारा कल्याण है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। यह तो पतित दुनियां है। पतित–पावन एक बाप को याद करो तो पावन दुनियां के मालिक बनो। अन्त मते सो गते हो जावेगी। तो किसी ना किसी को संदेश सुनाकर फिर भोजन खाना चाहिए। तुम हो गंड के गूडे मत के मूडे। बताते हो कि बाप को याद करने से इतने उंच बन जावेंगे। यह है ही रावणराज्य। वो लोग समझते हैं गांधी द्वारा भारत को रामराज्य मिला। गांधी के नाभी से नेहरू निकला। फिर नेहरू से शास्त्री, फिर उससे इन्दिरा। इन्दिरा से फिर दूसरा कोई निकलेगा। कोई क्रिश्चियन को भी प्रेजीडेंट बना देंगे। धर्म तो कोई है ही नहीं ना। मनुष्य ईश्वर अर्थ दान–पुण्य करते हैं ना। वो है इनडायरैक्ट। उनका फल दूसरे जन्म में मिलता है। अब तो मैं हूँ डायरैक्ट। और अभी इस पुरानी दुनियां की ही अंत है। सतयुग में तो दान–पुण्य की बात होती ही नहीं है। अभी है पिछाड़ी का दान। एकदम सरेंडर होना है। बाप तो देने लिए ही कराते हैं कि इनका कुछ भविष्य बन जावे। कहेंगे अच्छा तुम्हारे पास पैसे पड़े हैं तो जाकर सेंटर खोलो। प्रदर्शनी बनाओ। गरीब को कहेंगे सिर्फ बोर्ड लगा दो। गेट वे टू हैविन। भगवानोवाच्य है कि मामेकम् याद करो तो तुम पुजारी से पूज्य बन जावेंगे। स्वर्ग में सुखी तो सभी होंगे ;परंतु मर्तबे तो नम्बर होंगे ना। मोह भी कम नहीं है। घर में बहु आई तो समझते हैं कि भगवती....मिली हैं। उनको देख बड़े खुश होते रहते हैं। यह नहीं समझते कि उनका तो मुंह नर्क की तरफ है। कुमारियों को तो बहुत सर्विस का जोश आना चाहिए कि हम भारत को स्वर्ग बनाकर दिखावेंगी। कुमारी वो 21कुल का उद्धार करेगी अर्थात् 21जन्मों के लिए उद्धार कर सकती है। गंधर्व विवाह कर .....का भी उद्धार कर सकती है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे .....
.....